महाभारत के संजय के संजय से उतरी,
शिवाजी ने कहा, अप्रील की खूबसूरत फूल,
अप्रैल ओनल!..
चहकती थी, फुदकती थी,
चहुँ ओर बिखेरती थी,
अपनी खुशबू और दरियादिली।
ईश्वर भी खुश हुआ था,
अपनी खुशियो की पोटली,
जमीं पर भेज कर।
तू तो जीव से लड़ने वाली थी,
खुद से ही कैसे हार गयी..?
कहीं ऐसा तो नही कि,
हमारे पुरुषार्थ से तुम्हारा भरोसा टूट गया हो..?
मैंने देखा है तुम्हे, जलते हुए..,
तुम्हारे चिता की तपिश में,
आत्माओं को मरते हुए।
हम खड़े बस तमाशाई बने रहे,
शायद किसी और चिता की तपिश की तलाश में।
यकीं है,
तुम कभी तो आओगी।
इस घर न सही,
किसी घर ही सही।
हमारे शब्द भी ख़त्म और,
मोमबत्तियां भी खत्म।
अँधेरे में ही सही,
क्षण में ही सही,

कभी तो आना और हमें दीप्त कर जाना,
क्योकि हमने तो तुम्हे जलाया है, मोक्षदा में।
कर्मकाण्ड भी किये है।
हो सके तो,
हम कायरों को माफ़ कर देना,
तुम्हे न तो समझ सके,
और न ही बचा सके।
"" ओ री चिरैया, अंगना में फिर आजा रे””

शुक्र है, हमने सहना सीख लिया है..,
वरना कहने की नौबत ही नहीं आती!..
खौफ़ खाओ, हमारी फितरतो से..,
यहाँ जनाज़ो ने भी इश्तकबाल किया है!...